Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

45

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सोशल मीडिया का प्रभाव

इन्दू पारीक

रिसर्च स्कोलर, शिक्षण विभाग, सुरेन्द्रनगर युनिवर्सिटी, वढवान शहर, गुजरात

आमुख

आज मनुष्य अंतरिक्ष मानव है जो चाँद तक पहुच गया है क्योंकि यह युग सोशल मीडिया का युग है। इन सोशल मीडिया माध्यमों से अपने विचारों, भावनाओं और संदेशों को एक-दूसरे तक संप्रेषित किया करते थे। संवाद के माध्यम तकनीक के साथ बदलते चले गए। कहा जाता है मनुष्य सभी जीवों में सर्वश्रेष्ठ है। आदिमानव के काल से वह 21वीं शताब्दी में अंतरिक्ष तक पहुँच गया है। 2000 के दशक के शुरु में सॉफ्टवेयर विकास कर्ताओं ने अंतिम इस्तेमालकर्ताओं को इस बात में सक्षम बनाया कि वे वर्ल्ड वाइड वेब पर स्थिर और निष्क्रिय पृष्ठों को देखने के बजाय अधिक परस्पर क्रियाशील बन सके ऑनलाइन या वास्तविक समुदायों में प्रयोक्ता-जनित सामग्री का इस्तेमाल कर सके। इसकी परिणीति वेब 2.0 के रूप में हुई और सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई कि इससे एक अद्भुत प्रयोग का सृजन हुआ जिसे अब हम सोशल मीडिया कहते हैं।

वर्तमान में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी जोकि सोशल मीडिया के उपयोगकर्ता हैं वे अपने साथ कुछ उद्देश्यों को लेकर चल रहे हैं। इन उद्दश्यों में सामाजिक उद्देश्य व शैक्षिक उद्देश्य शामिल हैं। इन्हीं दोनों पर आधारित उनकी समस्त क्रियाएँ सम्पादित होती रहती हैं। वास्तविकता में सोशल मीडिया का विभिन्न रूपों में उपयोग विद्यार्थियों को कई तरीकों से प्रभावित करता है। प्रस्तुत शोधपत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सोशल मीडिया का प्रभाव की जाँच करने हेतु किया गया है। जिसमे विवरणात्मक अनुसंधान प्ररचना का

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

प्रयोग खास कर किया गया है। शोध उपकरण के रूप में छात्रों के व्यक्तित्व की जाँच करने एवं उसकी क्षमता हेतु स्वनिर्मित व्यक्तित्व मापन हेतु 6 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली 'डी.पी.आई' परीक्षण के लिए अंगेजी संस्करण का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में राजस्थान राज्य के सिकार जिले से चयनित दसों प्रखंड से 5 माध्यमिक विद्यालय से 20 छात्रों एवं 20 छात्राओं कुल 200 उत्तरदाताओं के रूप में विद्यार्थियों का चयन किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रतिशत, मानक विचलन एवं टी-परीक्षण आदि सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सोशल मीडिया का कैसा प्रभाव पड़ता है वह जाँच करने हेतु प्रस्तुत अनुसंधान किया गया है।

संकेताक्षरः माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, व्यक्तित्व, सोशल मीडिया का प्रभाव

1. प्रस्तुतीकरण

आज का युग "सोशल मीडिया" का युग है। रामायण की पौराणिक कथा के अनुसार, रामभक्त हनुमान रावण की लंका में दूत बनकर गए थे। कालिदास ने मेघदूत की रचना करते समय भी मेघ को अपना माध्यम बनाया था। इसी तरह यह युग सोशल मीडिया और तकनीक का युग है, जिसके माध्यम से हम अपने विचारों, भावनाओं और संदेशों को एक-दूसरे तक पहुंचाते हैं। संवाद के माध्यम तकनीक ने भी बदल जाने के साथ-साथ बदलते चले गए हैं। मुद्रित माध्यम भी हमें प्राप्त है। माना जाता है कि मनुष्य सभी जीवों में सर्वश्रेष्ठ है और इस युग में इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से हमने बड़ी प्रगति की है।

पहली बार सोशल मीडिया का उल्लेख 1994 में हुआ था, जब पहला सोशल मीडिया "जी.ओ.साइट" शुरु हुआ। लेकिन आजकल फेसबुक, ट्विटर, गूगल, यूट्यूब, व्हाट्सएप, टेलीग्राम जैसी सोशल मीडिया साइट्स दुनिया भर में लोगों को जोड़ रही हैं। यह सोशल मीडिया साइट्स सूचना साझा करने, जनमत जनमत तैयार करने, विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के लोगों को जोड़ने, भागीदार बनाने और नए तरीके से संदर्भ बनाने में मदद करती है।

इसके साथ ही आईसीटी (सूचना संचार प्रौद्योगिकी) पर आधारित सोशल मीडिया का आविष्कार शिक्षा और अध्ययन में नए नवाचारों की गति को तेजी से बढ़ा दिया है। यह युग इंटरनेट और वेब मीडिया (सोशल मीडिया)

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

के युग के रूप में माना जा रहा है और इंटरनेट ने मनुष्य के जीवन को सरल और सुगम बना दिया है। आजकल हमें सक्रिय इंटरनेट कनेक्शन वाले फोन, लैपटॉप या कंप्यूटर की आवश्यकता होती है।

आज के दौर में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का प्रयोग हर आयु वर्ग के लोगों में बढ़ रहा है खासकर छात्रों में। सोशल साइट्स ने एक शांतिपूर्ण परिवर्तन के रूप में समाज को नई सार्थक उपलब्धियों की ओर अग्रसर किया है और यह विश्वव्यापी स्तर पर नई समझ विचार और दृष्टिकोण पैदा कर रहा है। आईसीटी और सोशल मीडिया के आविष्कार ने हमारे समय के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण साधना प्रदान किया है और यह सत्य है कि युवा पीढ़ियों के विकास में सोशल मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान है। जब पूरे विश्व में सूचना तेजी से पहुंच जाती है तो सोशल मीडिया का युवाओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है और इसे नकारा नहीं जा सकता। सोशल मीडिया ने विश्व के युवाओं के दिमाग को प्रभावित किया है और इसके माध्यम से हमने सभी जीवों के सर्वश्रेष्ठ जीव के रूप में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अतः यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के अध्ययनरत विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया कई तरीकों से अपना प्रभाव डालता है और उसमें मुख्य रूप से उनका व्यक्तित्व का समावेश ही मुख्य रूप शामिल हैं और यही समस्या की पृष्ठभूमि का आधार व अध्ययन का विषय है। प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सोशल मीडिया का प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

2. भारत में सोशल साइट

भारत में सोशल साइट्स जैसे Facebook, WhatsApp, Email आदि का प्रभाव बढ़ता जा रहा है जिसके परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव दोनों हो रहे हैं। मानव व्यक्तित्व को प्रकट करने के लिए फेसबुक प्रोफ़ाइल एक महत्वपूर्ण टूल के रूप में कार्य करता है। शब्द "व्यक्तित्व" वास्तव में लैटिन शब्द से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ होता है एक कलाकार की विभिन्न भूमिकाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए।

व्यक्तित्व का विवादित रूप मानव दर्शनशास्त्र में है क्योंकि विभिन्न सिद्धांतकारों ने इसकी विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं। व्यक्तित्व का वर्णन आमतौर पर विशेष लक्षणों और गुणों के संग्रह के रूप में होता है जैसे कि व्यवहार, भावनाएँ,

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

विचार पैटर्न और भावनाएँ जो किसी व्यक्ति के लिए विशेष होते हैं। इन नकारात्मक प्रभावों के प्रति लोगों को जागरूक रहना महत्वपूर्ण है।

इंटरनेट के माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों में अनेक प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त होती हैं जैसे कि व्यापार, खेल, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, रक्षा, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, फिल्म, मनोरंजन और अपराध आदि जिनके बारे में केवल पुस्तकीय ज्ञान पर्याप्त नहीं होता है। इसलिए सोशल साइट्स विद्यार्थियों के ज्ञान क्षेत्र को विस्तारित करते हैं जो सही है लेकिन कई बार असुविधाजनक भी हो सकता है।

इस परिवर्तन के संदर्भ में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर कैसा प्रभाव पड़ रहा है और क्या यह प्रभाव उनके जीवन शैली पर जारी है यह सवालों का अध्ययन करने का मुख्य उद्देश्य है। वर्तमान में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी विभिन्न उद्देश्यों के साथ सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं जिनमें सामाजिक और शैक्षिक उद्देश्य शामिल हैं। इन उद्देश्यों पर आधारित उनकी क्रियाएँ सम्प्रेरित हो रही हैं।

वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सोशल मीडिया के प्रभाव की जांच है। समायोजन एक प्रक्रिया और क्षमता है जो विद्यार्थियों को उनकी योग्यताओं और क्षमताओं के के संदर्भ में सहायता करती है और उनके परिस्थितियों के अनुसार उन्हें आगे प्रगति करने में मदद करती है।

3. साहित्य की समीक्षा

- **Teka, D. et al (2019),** ने अपने शोध में Þहवासा शहर में माध्यमिक और प्रारंभिक निजी स्कूल किशोरों के मनोसामाजिक समायोजन पर सोशल मीडिया के प्रभावÞ का अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक और प्रारंभिक निजी स्कूल के किशोरों के मनोसामाजिक और शैक्षणिक समायोजन पर सोशल मीडिया के प्रभाव की जांच करना था। इस अध्ययन में यादृच्छिक रूप से चयनित 337 छात्रों ने भाग लिया। आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए मात्रात्मक अनुसंधान डिजाइन का उपयोग किया गया था। सोशल मीडिया के उपयोग के तीन आयामों और मनोसामाजिक समायोजन के पाँच

आयामों पर डेटा एकत्र करने के लिए पाँच बिंदुओं वाले लिकर्ट स्केल के साथ एक प्रश्नावली का उपयोग किया गया था। खोज से पता चला कि फेसबुक, व्हाट्सएप और वाइबर के उपयोग का शैक्षणिक प्रदर्शन और किशोरों के आत्म-सम्मान के साथ महत्वपूर्ण नकारात्मक संबंध है सोशल मीडिया के इन तीन आयामों का मनोसामाजिक समस्याओं जैसे अवसाद, सामाजिक चिंता और सामाजिक जुड़ाव के साथ महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध है, किशोरों के आत्म-सम्मान और सामाजिक जुड़ाव के लिए फेसबुक का उपयोग सबसे अधिक योगदान देने वाले चर के रूप में पाया गयाय किशोरों के शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए फेसबुक और वाइबर के उपयोग को नकारात्मक योगदानकर्ता के रूप में पाया गयाय व्हाट्सएप और वाइबर का उपयोग किशोरों की सामाजिक चिंता के कारक के रूप में पाया गयाय वाइबरए व्हाट्सएप और फेसबुक के उपयोग को किशोरों के अवसाद में पहले, दूसरे और तीसरे महत्त्वपूर्ण योगदानकर्ताओं के रूप में पहचाना गया। इसके अलावा टी-टेस्ट परिणाम ने मनोसामाजिक समायोजन के संदर्भ में पुरुष और महिला छात्रों के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण अंतर प्रकट किया। निष्कर्षों के आधार पर इस से सिफारिश की गई कि स्कूल के प्रधानाचार्यों और अन्य जिम्मेदार निकायों को सोशल मीडिया के उपयोग को विवेकपूर्ण रूप से प्रमोट करने की सिफारिश की जाती है जो किशोर छात्रों के मनोसामाजिक समायोजन को सुधार सकता है।

- **Fovet, F. (2009),** ने अपने अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य "माध्यमिक स्तर के छात्रों पर सोशल, एमोशनल और बीहेवियरल कठिनाइयों के संदर्भ में फेसबुक के प्रभावों का अध्ययन" किया था। उन्होंने इस अध्ययन के लिए एक मिश्रित शोध पद्धति का उपयोग किया जिसमें गुणात्मक और गणनात्मक दृष्टिकोणों का संयोजन किया गया। कुल में 12 छात्रों का चयन स्नोबॉल सैम्पलिंग मेथड के द्वारा किया गया। उन्होंने एक आधा-संरचित प्रश्नावली का उपयोग उपकरण के रूप में किया। उनके अनुसंधान परिणामों ने दिखाया कि शिक्षकों को छात्रों के सोशल, एमोशनल और बीहेवियरल कठिनाइयों के प्रति सतर्क रहना चाहिए और फेसबुक के शैक्षिक उपयोग के लिए उन्हें मार्गदर्शन देना चाहिए।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

- **Kavita (2015)**, द्वारा किया गया एक अध्ययन दिखाता है कि 16 से 22 वर्षीय विद्यार्थियों और किशोरों पर सोशल मीडिया के प्रभाव के संबंध में लगभग 97.7 प्रतिशत इंटरनेट उपयोगकर्ता सोशल नेटवर्किंग साइटों के सदस्य हैं और इनमें से 85 प्रतिशत रोज़ाना उपयोग करते हैं जिनमें से 41 प्रतिशत 12 से 16 वर्षीय हैं और 40 प्रतिशत 17 से 21 वर्ष के हैं। इस अध्ययन के परिणामस्वरूप शोधार्थी ने निष्कर्ष किया है कि सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों और किशोरों की शिक्षा पर पड़ रहा है। इन विद्यार्थियों और किशोरों के लिए सोशल मीडिया पर बेहद अनावश्यक समय बर्बाद करने का भुगतान उनके आवश्यक अध्ययन घंटों की आपदा में बदल रहा है। सोशल मीडिया के ऐप्स आमतौर पर 2डी और 3डी डिस्प्ले पर आधारित होते हैं और इनका अत्यधिक उपयोग विद्यार्थियों को शारीरिक समस्याओं का सामना करने के लिए कर रहा है जैसे कि रक्तचाप की समस्याएँ। इसके परिणामस्वरूप, यह शारीरिक दुष्प्रभाव उनके सामाजिक व्यवहार और शैक्षिक प्रदर्शन पर भी असर डाल रहा है।

4. अध्ययन परिसीमन एवं न्यादर्श चयन विधि

शोध उपकरण के रूप में छात्रों के व्यक्तित्व की जाँच करने एवं उसकी क्षमता हेतु स्वनिर्मित व्यक्तित्व मापन हेतु 6 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली डी.पी.आई परीक्षण के लिए अंगेजी संस्करण का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में राजस्थान राज्य के सिकार जिले से चयनित दसों प्रखंड से 5 माध्यमिक विद्यालय से 20 छात्रों एवं 20 छात्राओंए कुल 200 उत्तरदाताओं के रूप में विद्यार्थियों का चयन निम्न प्रकार है।

विद्यालय	छात्र	छात्राए	कुल
गायत्री पब्लिक शिक्षण संस्थान	22	18	40
स्वामी विवेकानंद सेकण्डरी स्कूल	26	14	40

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

राधूकुल विद्यालय	18	22	40
शार्स्री बालनिकेतन सेकण्डरी स्कूल	10	30	40
भडवासी सरकारी माध्यमिक	24	16	40
विद्यालय	100	100	200

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रतिशत, मानक विचलन एवं टी-परीक्षण आदि सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सोशल मीडिया का कैसा प्रभाव पड़ता है वह जाँच करने हेतु प्रस्तुत अनुसंधान किया गया है।

5. जनसांख्यकिय रूपरेखा

राजस्थान के सिकार जिले के 5 माध्यमिक विद्यालयों में से लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं का चयन इस प्रकार किया गया है:

लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत	वैध प्रतिशत	संचित प्रतिशत
छात्र	100	50	50	50
छात्राएँ	100	50	50	100
कुल	200	100	100	

उपरोक्त तालिका के माध्यम से शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में चयनित उत्तरदाताओं का लिंग के आधार पर विश्लेषण किया है तथा स्पष्टतः उल्लेखित है कि 100 उत्तरदाताओं में से 50 (50 प्रतिशत) उत्तरदाता छात्र एवं 50 (50 प्रतिशत) उत्तरदाता छात्राएँ हैं।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

6. विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया यूज़र्स की गणना

राजस्थान के सिकार जिले के 5 माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया

नेटवर्किंग साइट	छात्र	छात्राए	आवृति
फेसबुक	21	19	40
यूट्यूब	24	16	40
व्हाट्सएप	16	24	40
इंस्टाग्राम यूज़र	9	31	40
अन्य	13	3	40
कुल	83	117	200

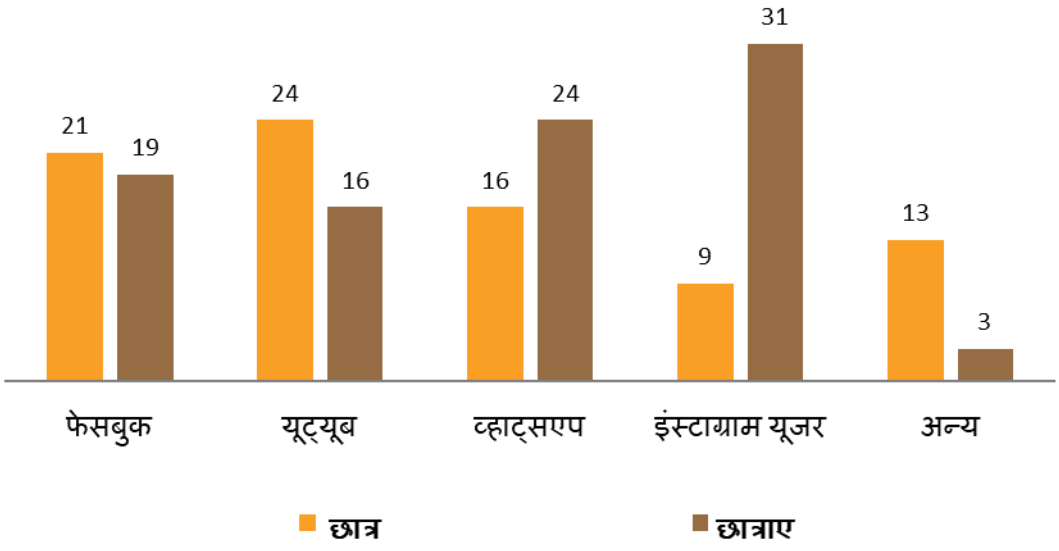

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

उपरोक्त तालिका के माध्यम से शोधकर्ता ने अध्ययन में चयनित उत्तरदाताओं द्वारा सोशल मीडिया यूज़र्स की गणना पर विश्लेषण किया है तथा स्पष्टतः उल्लेखित है कि फेसबुक पर 21 छात्र एवं 19 छात्राए है जबकी यूट्यूब पर 24 छात्र 16 छात्राए व्हाट्सएप पर 16 छात्र 24 छात्राए इंस्टाग्राम पर 9 छात्र 31 छात्राए इंस्टाग्राम पर 9 छात्र 31 छात्राए और 13 छात्र एवं 3 छात्राए अन्य सोशल मीडिया के यूज़र्स है।

7. सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर प्रभाव

राजस्थान के सिकार जिले के 5 माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया का उनके व्यक्तित्व

लिंग	संख्या	मध्य	मानक विचलन	त्रुटि माध्य	टी-मान	सार्थकता दर
छात्र	100	132.74	10.25	1.84	2.48	0.013
छात्राए	100	129.48	12.33			

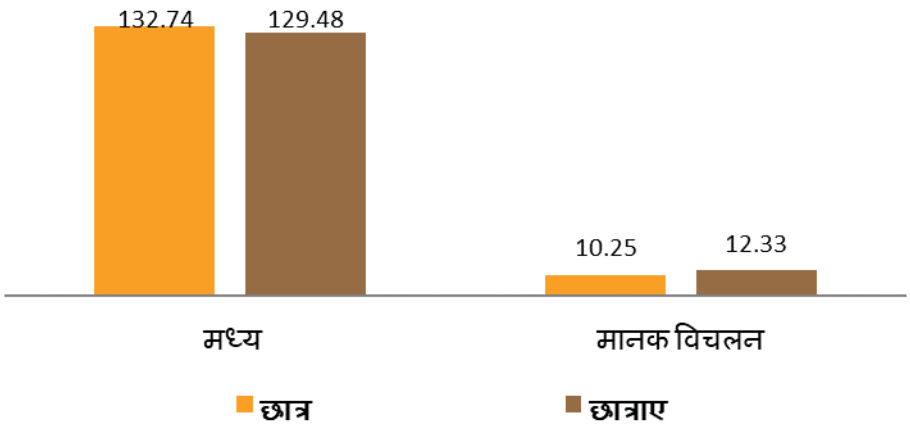

उपरोक्त तालिका एवं लेखाचित्र सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। उपरोक्त आँकड़ों की गणना करने से से स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया का छात्रों एवं छात्राओं के व्यक्तित्व पर माध्य अंक क्रमशः 132.74 व 129.48 एवं मानक विचलन क्रमशः 10.25 व 12.33 प्राप्त हुए तथा मानक त्रुटि मध्य 1.84 एवं टी-मान 2.48 प्राप्त हुए। इस अंतर्गत सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर प्रभाव के अध्ययन

हेतु आँकड़ों की स्पष्टता हेतु टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के माध्यम से यह अनुमान लगाया गया है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सोशल मीडिया के संबंध में सार्थकता स्तर 0.013 पाया गया। सार्थकता स्तर 348 की डिग्री के लिए महत्त्व के स्तर के 5 प्रतिशत से कम पाया गया। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत कर दिया गया है। निष्कर्षतः आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

8. निष्कर्ष एवं सुझाव

- राजस्थान के सिकार जिलें में माध्यमिक के छात्र फेसबुक पर और छात्राए इंस्टाग्राम पर ज्यादा एक्टिव है।
- सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सार्थक प्रभाव पाया गया है।

सोशल मीडिया के आगमन से व्यक्ति की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का चेहरा बदल चुका है। पहले जैसे नियंत्रण और शर्तों की प्रतिष्ठा अब नहीं है। आजकलए सोशल मीडिया हर व्यक्ति की दैनिक जीवन का हिस्सा बन गया है जिससे व्यक्ति अपनी भावनाओं, विचारों और प्रतिक्रियाओं को अभिव्यक्त कर सकते हैं। इसलिए सोशल मीडिया के माध्यम से विकास से संबंधित जानकारियों और कार्यक्रमों को विद्यार्थियों के पास पहुँचना चाहिए ताकि वे अपने विकास को बेहतर तरीके से कर सकें।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: Crossref, ROAD & Google Scholar

संदर्भ

- चौबे और कमल नयन. (2019). सोशल मीडिया और मतदाता. प्रतिमानए (13): 17-25
- बरमेजोए एफ. (2009). ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में दर्शकों का निर्माणः प्रसारण सेए न्यू मीडिया और सोसाइटी
- पंचोलीए पी. एस. (2018). सोशल मीडिया का बढता सकारात्मक वर्चस्व. Vidhyayana-An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal 3(5).
- राज कुमार सिंह. (2021). वर्तमान समय में सोशल मीडिया की भूमिका का समाजशास्त्रीय परिदृश्य. Academic Social Research 7(4).
- सुनीता कुमारी. (2022). बदलते परिवेश में सोशल मीडिया की भूमिकाः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. Academic Social Research: 8(1).
- सुनीता कुमारी. (2022). सामाजिक जीवन एवं सोशल मीडिया. TAS (Times and Space) International Journal, 1(2).
- Fovet, F. (2019). Impact of the use of Facebook amongst students at high school age with Social, Emotional and Behavioral Difficulties. San Antonio. TX 18-21. Retrieved from http://fie-conference.org.
- Kavita (2015). The Influence of social media on Indian Students and Teenagers, International Journal of Advance Research in Science and Engineering, 4(1), 487-493
- Teka, D., Workineh, B., & Mohit, B. (2019). The Effects of social media on The Psychosocial Adjustment of Secondary and Preparatory Private School Adolescent in Hawassa City. IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS), 24(5), 73-79.